अन्ताक्षरी

खेल भावना

कहानी माला—32

न्गुयेन कोंग होआन
अनुवादः रामकृष्ण पांडेय
(वियतनाम की कहानी)

खेल भावना

न्गुयेन कोंग होआन
अनुवादः रामकृष्ण पांडेय
(वियतनाम की कहानी)

न्गुवोंग गांव के लिए हुक्मनामा एक जिला सुरक्षा गार्ड ने लाकर दिया :

हुक्मनामा : न्गु वोंग गांव के विशिष्ट निवासियों के लिए यह सूचना जिलाधीश की ओर से जारी की जाती है कि प्रांतीय प्रशासन के आदेश से 19 मार्च, तदनुसार अनामीस कलेण्डर के पहले महीने के 29 वें दिन, श्रेष्ठ खिलाड़ियों की टीमों के बीच जिला स्टेडियम में एक फुटबाल मैच होगा। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित निर्देशों का

पालन करना अनिवार्य होगा :

गांव के विशिष्ट जन एक सौ लोगों के साथ मैच देखने आयेंगे। दोपहर तक उन्हें स्टेडियम में पहुंच जाना होगा। गांव के जिन निवासियों ने पिछले महीने स्टेडियम के उद्घाटन समारोह में भाग लिया था, उन्हें मैच के लिए आने की बाध्यता से मुक्त किया जाता है।

जितने लोग मैच देखने आएंगे उन्हें चुस्त-दुरूस्त कपड़ों में आना होगा। वे अनुशासन और विशिष्ट व्यवहार का परिचय देंगे तथा निरंतर करतल ध्वनि करते रहेंगे, क्योंकि कई विशिष्ट अतिथि इस अवसर पर उपस्थित रहेंगे।

न्गु वोंग गांव को पांच झंडे दस बजे दिन तक स्टेडियम में लेकर

पहुंच जाना होगा। खेल के इस अवसर को गंभीरता से लिया जायगा और जो अवज्ञा के दोषी पाये जाएंगे उन्हें पद-मुक्त कर दिया जायगा।

ले थांग, जिलाधिकारी

मिच ने दयनीय चेहरा बना कर गांव के प्रधान के सामने अपनी दलील पेश की : ''हुजूर दया कीजिए, मुझे इस झंझट में मत डालिये. ..... कल मुझे डिप्टी साहब का काम करना है। उनका कर्ज है मुझ पर। अगर नहीं गया तो पीट-पीट कर मुझे मार ही डालेंगे।''

प्रधान की त्योरियां चढ़ गयीं, उसने अपना सिर हिलाया और अपनी टूटी हुई छड़ी उठा कर उसे घुड़कते हुए कहा, ''तो तू है, पाजी कहीं का! समझ ले यह हुक्म ऊपर से आया है और मेरी बही के अनुसार इस बार तेरी ही बारी है।''

''मैं हजार बार आपके पांव पड़ता हूं, हुजूर। दया कीजिये।

इस बार मुझे छोड़ दीजिए। नहीं तो, मैं डिप्टी साहब की बुरी नजरों में आ जाऊंगा और मेरे परिवार को इसकी सजा भुगतनी पड़ेगी।''

''अगर इतना ही जरूरी है तो तू डिप्टी साहब से किसी दूसरे दिन काम करना भी तो तय कर सकता है।''

''मैं ऐसा कर कैसे सकता हूं हुजूर! मैं तो कमोबेश उनका गुलाम ही हूं। मैं उन्हें नाराज करने की हिम्मत नहीं कर सकता। मेरे बीवी-बच्चों की रोटी के वे ही सहारा हैं।''

''तुम भूखे मरो या खाते-पीते, यह मेरी सिरदर्दी नहीं है। मुझे सिर्फ इतना मालूम है कि जिला अधिकारी का हुक्म पूरा करना होगा। और जो हुक्मउदूली करेगा उसके बारे में अधिकारी को बता दूंगा। फिर जेल में सड़ना होगा उन्हें।''

''मैं दया की भीख मांगता हूं हुजूर। मेरी किस्मत आपके हाथ

में है। मुझ पर दया कीजिये!''

''तुम दया की भीख चाहे जितनी मांगो, अगर मैं तुम पर दया करने लगा तो मुझ पर कौन दया करेगा? और समझ लो तुम अगर खुद वहां नहीं पहुंचे तो मेरे आदमी घसीट ले जाएंगे। समझे?''

श्रीमती गाई ने अपने साथ लाये सुपारी के गुच्छे को बड़ी सावधानी से मेज पर रखा और फिर दरवाजे पर उकड़ूं बैठ गयी। परेशानी में कान खुजाते हुए उसने कहा—

''हुजूर मेरा पति बीमार है। जाने की हालत में कतई नहीं है। पर आपकी डांट से डरता है, इसीलिए खुद नहीं आया। मेरी विनती है हुजूर कि आप इस बार उसको छोड़ दें। इतना तो आप कर ही सकते हैं अपने अधिकार का उपयोग करके।''

''देख! तुझे समझना चाहिए कि शासन का मामला वैसे ही

नहीं चलता जैसे औरतों का।''

''क्या आप उसकी जगह गांव के किसी और आदमी को नहीं भेज सकते? मान जाइये हुजूर, वह सचमुच बीमार है। मैं वायदा करती हूं कि अगली बार वह जरूर जायगा।''

''जाना तो पड़ेगा ही, चाहे मर ही क्यों नहीं रहा हो। आखिर यह जिलाधीश का हुक्म है। अगर बीमारी के बहाने सबको छोड़ दें तो मैच क्या कुत्ते-बिल्ली देखेंगे?''

''ठीक रहता तो चुपचाप चला जाता । यहां से शहर है भी तो नौ किलोमीटर और फिर धूप तो उसे मार ही डालेगी।''

''मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है, यह तुम्हारा अपना मामला है। बहुत हो गया। अब मैं तुम्हारी कोई बात सुनना नहीं चाहता।''

''क्या मैं उस दिन बाजार न जा कर उसकी जगह जा सकती

हूं?''

''नहीं,बिल्कुल नहीं! औरतों की जगह फुटबाल का मैदान नहीं है!''

''हाय मैं क्या करूं.....हाय मैं क्या करूं?'' श्रीमती गाई सिसक उठी।

चमकीली आंखों वाली मैडम बिन्ह आखें मिचकाते हुए मुस्कुराई और कहा :

''हमारी ओर से उपहार स्वीकार करें महोदय! मेरा बेटा मैच देखने जरूर जाता, पर उसे शादी की एक दावत में जाना है। वह सैंग को अपनी जगह पर मैच में भाड़े पर भेज रहा है। मुझे यकीन है कि आप बुरा नहीं मानेंगे।''

''अगर जिलाधिकारी को पता चल गया तब मेरी तो जान

गई।''

''चिंता की कोई बात नहीं है, श्रीमान! अधिकारी तो लोगों को सिर्फ गिनते हैं पहचान पत्र तो देखते नहीं।''

''देखो मैं तुम्हारे बेटे की ओर से उपहार लेने में डरता हूं शासन का मामला है मजाक नहीं है समझती हो ना।''

''कृपा करके स्वीकार कर लीजिये, श्रीमान। हम पर दया करके स्वीकार कर लीजिये।

''लेकिन बताओ क्या सैंग के पास अपनी भिखमंगो जैसी पोशाक से बेहतर और कुछ पहनने के लिए है?''

''उसकी कोई चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। उसने किराये पर कुछ कपड़े ले लिए है। हमारे बीच हुए सौदे में यह भी शामिल था।''

प्रधान ने भुनभुनाते हुए पैसे जेब में रखा लिये और बोला "तुम्हारे जैसे लोग मुझे मरवा कर ही छोड़ेंगे।"

"लेकिन इससे कुछ फर्क तो नहीं पड़ता कि मेरा बेटा अपनी जगह किसी और को भाड़े पर वहां भेज देता है, क्यों गलत है क्या?"

"नहीं-नहीं, सैंग को कहना कि सार्वजनिक भवन में 21 तारीख को अलस्सुबह मेरा इन्तजार करें।"

"सो तो ठीक है, लेकिन जाने से पहले उसे कम से कम भात खा लेने का समय तो दे दीजिए। मैच तीन-चार बजे दिन से पहले तो क्या शुरू होगा। और वह दोपहर में भी यहां से चल सकता है। नहीं? बात ऐसी कि जब उसे दिन भर का पैसा दे ही रहे हैं, तो सोचते हैं कि सुबह उससे बगीचा ही कोड़वा लें।"

"जिलाधिकारी का हुक्म है कि दोपहर तक वहां पहुंच जाएं,

ताकि वे लोग देख लें कौन पहुंचा है और कौन नहीं। इसका मतलब हुआ कि हमें ग्यारह बजे तक पहुंच जाना होगा। झंडे तो दस बजे ही पंहुचा देने होंगे। इसलिए हम छः बजे तक यहां से चल पड़ेंगे। सभी सुबह-सुबह सार्वजनिक भवन के सामने इकट्ठे हो जायेंगे।"

"लेकिन इतनी जल्दी!"

"देखा, अगर तुम नहीं मानती तो तुम्हारे बेटे को भी उसी वक्त आना पड़ेगा।"

बूढ़ी महिला आतंकित हो गयी।"

"अरे नहीं श्रीमान! मैं तो बेकार ही यह सब सोच रही थी। हम वैसा ही करेंगे जैसा आपका आदेश होगा।"

"सभी को वहां पर पहुंच जाना है और तुम इससे अलग नहीं हो। और हाँ, सैंग को बता देना कि वह रात को ही अपना भात

पका ले, क्योंकि उसे खाना बनाने का समय नहीं मिलेगा।''

''जी महाशय।''

21 तारीख को पौ फटने से पहले ही गांव के सार्वजनिक केन्द्र में प्रधान की कर्कश आवाज़ गूंज रही थी।

''हैं, अठारह लोग गायब हैं, क्यों? अच्छी बात है, उठा लाओ उन्हें, बांध के यहां पकड़ लाओ! पहले उन्होने जाने का वादा किया और अब भागने की कोशिश कर रहे है।''

''जी हुजूर'', प्रधान के आदमी उत्साह से और अपनी-अपनी मशालें लेकर विभिन्न दिशाओं में निकल पड़े।

वह पीछे से चिल्लाया, ''गुस्ताखों पर कोई दया नहीं करना, पीटो सालों की। इसकी जिम्मेदारी मैं लेता हूं। दिखाता हूं कैसे जिलाधिकारी का हुक्म पूरा किया जाता है। बांध लाओ सालों को

मेरे सामने!''

''जी हुजूर'', कुत्तों के भौंकने की आवाज के बीच फिर उन्होंने जाते-जाते एक स्वर में कहा। घने कुहसे में मशालों की लौ तैरती-सी नजर आती थी।

प्रधान के दो आदमी कोमा के घर में जा घुसे।एक के हाथ में मशाल थी दूसरे के हाथ में एक नुकीला डंडा। किसी कमरे में कोई नहीं था। रसोई में भी नहीं, जहां उन्हाने राख और भूसी भी कुरेद-कुरेद कर देखा। घर के पिछवाड़े भी नहीं। अचानक उन्हें किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनाई भी पड़ी और उन्होंने देखा कि कोमा घास की ढ़ेर के पीछे पुआल के नीचे छुपा हुआ है। उन्होंने उसे बाहर घसीट लिया।

''छोड़ दो, मुझे छोड़ दो मैं पांव पड़ता हूं। मुझे यहां छोड़ दो।

मजदूरी पर जाना है। जाना ही होगा। वरना मैं और मेरा बच्चा भूखों मर जायेंगे।''

''वह सब हम नहीं जानतें। तुमने वादा किया था और मेयर से चालबाजी करके तुम नहीं बच सकते।''

''पर मेरे पास अच्छे कपड़े नहीं हैं और कौन मुझे उधार देगा।'' इसका हमसे कोई मतलब नहीं है। अपनी कहानी अब प्रधान जी को ही जाकर बताना। वह सार्वजनिक भवन में तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।

कोमा का बच्चा, जो डर के मारे गूंगा पड़ गया था, उससे छीन लिया गया और कोमा को वे लोग घसीटते हुए ले गये।

खोज-खोज कर निकालने के बाद भी मैच देखने के लिए सौ आदमी पूरे नहीं हुए। छः चालाक लोगों ने वह रात पास के गांव

में या अपने मित्रों के साथ बितायी, जैसे वह कोई मैच नहीं, कोई विपदा हो।

देर हो रही थी। प्रधान ने दांत पीस कर कहा। ''बेवकूफ, सुअर!''

उसने थूका ''देखा महज एक मैच के लिए वे लोग कैसा संकट मोल ले रहे हैं। मुझे तो इसके लिए जोर जबरदस्ती भी नहीं करनी चाहिए थी। और अब अगर पता चल गया कि छः लोग कम हैं तो अधिकारी के सामने मेरी पेशी जायेगी। अब 94 लोग पांच-पांच की लाइन में लग जायें। आगे मार्च करो। अब कोई भी भागा तो उसे कड़ी सजा भुगतनी पड़ेगी ध्यान रखना।''

प्रधान उनके पीछे-पीछे चला। उन पर सावधानी से नजर रखता हुआ। जैसे वे युद्ध-बंदी हों। वह भुनभुनता जा रहा था, ''भाड़

में जाएं सब। कोई उनको मारने नहीं ले जा रहा है। महज एक फुटबाल मैच में बुलाया गया है, और वे इस तरह भाग रहे हैं जैसे उन्हे डाकू पकड़ने आ रहे हों!''

साथियो,

अंताक्षरी के ये अंक आपको कैसे लगे? इसके बारे में अपने विचार और सुझाव जल्द से जल्द भेजें।

आपके जवाब के इन्तजार में--
शिवसिंह नयाल
'अलारिप्पु', बी-६/६२, पहली मंज़िल, सफदरजंग इन्कलेव,
नई दिल्ली-११००२६. दूरभाष : ६०६३२७

ज्योति लेजर टाइप सेटिंग
दिल्ली—110092